भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)

केन्द्रीय कमेटी

प्रेस वक्तव्य

17 नवंबर, 2020

भारतीय क्रांति व विश्व समाजवादी क्रांति के सच्चे मित्र कामरेड यान मिर्डाल को लालसलाम!

भारत की क्रांति, विश्व की उत्पीड़ित जनता के साम्राज्यवाद-विरोधी आंदोलनों एवं विश्व समाजवादी क्रांति के सच्चे मित्र, प्रसिद्ध लेखक एवं मार्क्सवादी बुद्धिजीवी कामरेड यान मिर्डाल को भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) की केंद्रीय कमेटी विनम्रता से क्रांतिकारी श्रद्धांजलि अर्पित करती है। उनके दुखद निधन पर उनके परिजनों और परिवार को गहरी दुख से संवेदना व्यक्त करती है।

मिर्डाल का जन्म एक बुद्धिजीवी परिवार में हुआ। उनके पिता गुर्नार मिर्डाल, जो एक सामाजिक वैज्ञानिक और आर्थशास्त्री थे एवं उनकी माता अलवा राइमर, भारत में स्वीडिश राजदूत के बतौर काम किया, उन दोनों को अर्थशास्त्र व निरस्त्रीकरण में उनके काम के लिए नोबल पुरस्कार से सम्मानित किया। उनके माता-पिता के उदारवादी बुर्जुआ दृष्टिकोण एवं व्यक्तिगत मसलों में मतभिन्नता के चलते यान किशोरवस्था में ही अपने जीवन को अपनी इच्छानुसार जीया। अपनी आत्मकथात्मक किताब 'एक निष्ठाहीन यूरोपवासी का कबूलनामा' (Confessions of a disloyal European) के जरिए उन्होंने यूरोपीय औपनिवेशिक और साम्राज्यवादी प्रभाव के प्रति अपनी अस्वीकृति को प्रसिद्ध किया।

यान मिर्डाल अपने काल के सर्वहारा आंदोलनों एवं राष्ट्रीय-मुक्ति संघर्षों का न सिर्फ निरीक्षण किया, बल्कि उनके प्रति मार्क्सवादी दृष्टिकोण को अध्ययन कर विकसित किया एवं इन आंदोलनों को ऊंचा उठाया। उन्होंने मार्क्सवाद का सिद्धांत के रूप में अध्ययन किया एवं उसे व्यवहार में मार्गदर्शन के रूप में देखा। उनका विश्वास था कि मार्क्सवाद सिद्धांत एवं व्यवहार से जनता को शोषण व उत्पीड़न से मुक्ति मिलेगी। विश्व में विभिन्न इलाकों में जारी सर्वहारा आंदोलनों के साथ आत्मसात करते थे। विभिन्न देशों में जाकर वहां के क्रांतिकारियों से मिले। उन आंदोलनों के बारे में अपनी टिप्पणी लिखी। यूरोप एवं तीसरी दुनिया के देशों के बीच संबंधों पर 'निष्ठावान छवियां' (Loyal images) के नाम से एक लंबा निबंध लिखा। यह उनका एक प्रमुख योगदान रहा। 'मंतली रिव्यू' जैसे पत्रिकाओं में उनके निबंध न सिर्फ उन क्रांतियों के अनुभव, बल्कि मिर्डाल की सर्वहारा जोश भी दर्शाती है।

यान मिर्डाल कई बार भारत आए थे। देश में अतीत व वर्तमान की क्रांति का अध्ययन किये। 1980 के दशक में तेलंगाना के संघर्षरत इलाकों का दौरा किया। आज के तेलंगाना के करीमनगर एवं आदिलाबाद जिलों में तब चल रहे किसान आंदोलनों के बारे में 'भारतदेश इंतजार में है' (India waits) के नाम पर निबंध लिखा। लगभग 30 वर्षों के बाद 2010 में भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) के नेतृत्व कामरेडो से आ मिले। उसके बाद 'भारत पर लालसितारा' (Red star over India) के नाम पर एक अत्यंत महत्वपूर्ण, विचारशील व प्रेरणादायक पुस्तक लिखा। भारत के क्रांतिकारी आंदोलन के बारे में एवं दंडकारण्य में भ्रूण रूप में जन्मे जनता की राजनीतिक सत्ता संबंधित अपनी टिप्पणियों को इस पुस्तक में विर्णन किया। इस पुस्तक का भारत एवं यूरोप की कई भाषाओं में अनुवाद हुआ एवं यह विश्वभर में क्रांतिकारी समर्थकों में बहुत प्रचालित हुआ। यह पुस्तक हमारी पार्टी की विचारधारा को विभिन्न देशों के माओवादी पार्टियों से परिचित करने में मददगार साबित हुई।

वे जब हमारे पास आये तब विश्व क्रांतियों पर उनके विशाल अध्ययन से हमें बहुत कुछ सीखने को मिला। 'मैं किसी को सलाह नहीं देता' यह बताते समय काफी विनम्र थे। उनका दृढ़विश्वास था कि क्रांतियां जरूर सफल होगी। मिर्डाल का समझ यह था कि 'जनता क्रांति करती हैं, जनता का नेतृत्व प्रदान करने वाली पार्टी देश की ठोस परिस्थितियों के मुताबिक रणनीति व कार्यनीति तय कर क्रांति करनी चाहिए। रूस में यही हुआ एवं चीन में भी। आप ने भी वहीं करना चाहिए।' उन्होंने कहा, 'एक लेखक के तौर पर जनता के जायज संघर्षों का वर्णन करता हूं। मेरा मकसद यह है कि इस देश में जनता किस लिए, किस तरह क्रांति कर रही हैं, इसे भारत में और बाहर में रह रहे लोगों को बताना'।

इस पुस्तक से कुछ और उद्धरण इस तर है, 'तमाम इतिहास में शासकों एवं उत्पीड़ितों के बीच के में उत्पीड़ितों का पक्ष ही सही साबित हुआ है, यह जितना सच है, 2010 के भारत में भी यह उतना ही सच है...', '...बेसहारा जनता जब चिंगारियों के रूप में तब्दील हो रहे हैं, भारत पर लालसितारा जगमगा रहा है। उस रोशनी को देखने के बाद मेरे अनुभव, सोच एवं प्राथमिक प्रस्ताव लिख रहा हूं।। वह मेरा परम कर्तव्य है...'।

उन्होंने, भारत की क्रांति को विश्वभर में प्रचार करने के लिए अपार प्रयास करने वाले कामरेड हरिशर्मा (1934-2010) के नाम पर इस पुस्तक को समर्पित किया।

इस पुस्तक का अनावरण की सभा में शिरकत होने से यान मिर्डाल को रोकने का प्रयास भारत की केंद्र सरकार ने की। उनकी पासपोर्ट को रद्द करने का प्रयास किया। उनपर एक फर्जी मामले दर्ज करने का भी सोचा। किंतु वे अपने विश्वास पर कायम रहे। इन सभी कपट हरकतों का उचित जवाब दिये।

यान मिर्डाल भाषणों एवं लेखनों तक सीमित नहीं रहे। लेखक के रूप में जनांदोलनों का प्रचार किया। बहुराष्ट्रीय कार्पोरेशनों के साथ किए गए समझौतों को अमल करने के लिए, भाकपा (माओवादी) को कुचलने भारत की शासक वर्ग द्वारा चलाया गया ऑपरेशन ग्रीनहंट हमले की निंदा की। वे पैसे या प्रतिष्ठा के लालची नहीं थे। एक अवसर पर विश्वप्रसिद्ध सर्वहारा बुद्धिजीवी ने अपनी भावनाओं को उजागर किया। उन्होंने कहा, 'मेरे सभी पुस्तक, उन पुस्तकों से मिलने वाले धन और मेरी संपत्ति को मेरे देश के एक युवा संगठन को दे दिया है। अब मेरा एकमात्र संपत्ति यही कहा जा सकता है कि मेरा जन्मस्थल ब्रोमा के शमशान घाट के 6 फीट की जमीन'।

यान मिर्डाल 30 किताबें लिखे थे। दस से अधिक देशों का दौरा किए। वर्तमान क्रांतिकारी आंदोलनों पर उनके दिल में एक आशा थी। किशोर अवस्था से ही विश्वभर की क्रांतियों का समर्थन करते हुए कहे और लिखे थे। भविष्य का समतामूलक समाज का सपना देखते हुए 93 वर्ष के उम्र में वे हमसे विदा लिये।

कामरेड मिर्डाल हमारे कामरेडों में लगभग हर एक कामरेड से बात किए। 82 वर्ष की उम्र में जब हमें मिलने आये, तब उनके प्रति पीएलजीए कामरेडो ने बहुत ही ध्यान दिया। उनकी दैनंदिन कार्यों में मदद किया पीएलजीए कामरेडो के प्रति वे बहुत-बहुत धन्यवाद व्यक्त किया। वे उनपर जो वात्सल्य एवं ध्यान दर्शाया, उसे वे प्रेमपूर्वक याद करते हैं। स्थानीय गोंड आदीवासी से आए पीएलजीए कामरेडों के साथ अपने बातचीतों का उस पुस्तक में वर्णन किया। समाज, पार्टी एवं पीएलजीए में सांस्कृतिक एवं मानव संबंधों का काफी परिश्रम के साथ विश्लेषित किया।

फासीवाद विश्वभर का रुझान के रूप में तब्दील होने की इस परिस्थिति में यान मिर्डाल का जाना वर्तमान साम्राज्यवाद-विरोधी आंदोलनों के लिए गंभीर नुकसान है। उनके लेखन, विश्लेषण एवं जोश क्रांतिकारी कार्यकर्ताओं एवं समर्थकों के लिए सदा प्रेरित करते रहेंगे। जो समाज को बदलना चाहते हैं, विशेषकर, जनहितैषी बुद्धिजीवियों के लिए उनके सोच एवं व्यवहार आदर्शनीय हैं। आइएं! हम सभी, शोषकों के प्रति नफरत और जनता के प्रति प्रेम भर कर, मानव समाज के विकास के लिए असमान योगदान देने वाली उनकी स्फूर्ति से हमारे दिल भर लें। भारत एवं विश्व की उत्पीड़ित जनता की मुक्ति के लिए यान मिर्डाल का योगदान को और आगे ले जाएं। उनकी याद में समस्त वेतन दासता एवं साम्राज्यवाद के खिलाफ समाजवाद-साम्यवाद के लिए अंतिम दम तक लड़ने की शपथ लें।

अभय

अभय
प्रवक्ता
केन्द्रीय कमेटी
भाकपा(माओवादी)